पद ५१

(राग: यमन जिल्हा - ताल: दीपचंदी)

स्फूर्ति कोऽहं भ्रांति गेल्या जीव होसी।।२।। आतां माणिक मनोहर

भाव। माणिक कृपेनें आला अनुभव।।३।।

भ्रम गेल्या जाण ब्रह्म होशी रे।।ध्रु.।। भ्रमनाशक एक गुरुपाय।

म्हणूनि भजावा तो सर्व उपाय।।१।। अहं ब्रह्मास्मि याची होय